

अंचल कार्यालय, महागामा

केश का प्रकार :- अवैध/संदेहास्पद जमाबंदी

अभिलेख संख्या :- 86/16-13

अपर समाहर्ता गोड्डा के पत्रांक 615/ रा0 दिनांक 17.05.2016 के आधार पर किया गया है जिसमें उन्होंने श्री मति राजबाला बर्मा मुख्य सचिव झारखंड सरकार द्वारा संदेहास्पद जमाबंदी की अभियान चलाकर जाँच कर समयवद्ध प्रभाव कारी कदम उठाते हुए अवैध जमाबंदी रद्द कर अनुपालन सुनिश्चित करने हेतु निदेश प्राप्त है। अतः पत्र कि प्रति सभी राजस्व कर्मचारियों को निर्गत करते हुए पत्र में वर्णित विन्दुओं पर जाँच प्रतिवेदन मांग की गई। उक्त पत्र के अनुपालन में हल्का कर्मचारी श्री गंगेश कुमार दास वो अंचल निरीक्षक श्री गोविंद प्रसाद दास का जाँच प्रतिवेदन प्राप्त है। जिसमें उन्होंने प्रतिवेदित किया है कि मौजा कुफुआ थाना नं0 692 गैरमजरुआ खाता नं0 2418 दाग नं0 32 रकबा 02-16-18 किस्म पत्ती कदीम श्री मेघु रविदास पिता गंगेश रविदास साकिन के नाम से पंजी 2 में नया जमाबंदी कायम है। जो संदेहास्पद प्रतीत होता है। अतः श्री मेघु रविदास को दिनांक 20/5/16 समय 11:00 AM पुर्वाह्न में उक्त भूमि प्राप्त करने से संबंधित दस्तावेज की मूल प्रति सत्यापन हेतु अधोहस्ताक्षरी के समक्ष समर्पित करने का नोटिश निर्गत करें।

मेघु रविदास  
20/5/16

अंचल अधिकारी,  
महागामा।

20/5/16

आंकलेख उपस्थापित। मेघु रविदास पिता गंगेश रविदास के पुत्रों के नाम से पंजी 2 में नया जमाबंदी कायम है। जो संदेहास्पद प्रतीत होता है। अतः श्री मेघु रविदास को दिनांक 20/5/16 समय 11:00 AM पुर्वाह्न में उक्त भूमि प्राप्त करने से संबंधित दस्तावेज की मूल प्रति सत्यापन हेतु अधोहस्ताक्षरी के समक्ष समर्पित करने का नोटिश निर्गत करें।

जमिया देवी

sandha

मेघु रविदास  
20/5/16  
310 310

11/8/16

आमिलेख उपस्थापित। जमीन देवी उपस्थित। दावा के  
संबंध। आमिलेख दिनांक 28/8/16 को रखा।

11/8/16  
30/3-

जमियादीकी

31/7/2020

आमिलेख उपस्थापित।  
नैतिक निर्णय करें।

कॉम

महागाम

आमिलेख

05.01.2021

आमिलेख उपस्थापित।

राज उपनिरीक्षक - सह - प्रवर्गी कंयन निरीक्षक  
महागाम से प्रसंगत भूमि का भौतिक प्रतिवेदन के  
आमिलेखीय प्रतिवेदन प्राप्त हुआ है जिसका  
अवलोकन किया प्रतिवेदानुसार सर्वेक्ष सर्टिफिकेट  
पंजी - II रैयत को भूमि सहाय पदाधिकारी से  
प्राप्त है। वर्तमान में उक्त भूमि ई० सी० एच०  
ECL क्षेत्र के आधिपत्य क्षेत्र के अंतर्गत है।

अतः उपरोक्त के आलोक में आमिलेख की  
फरिवाई समाप्त की जाती है।

लेखापति

कंयन आधिकारी  
महागाम

कंयन आधिकारी  
महागाम